सुबह सात (7) से दस (10) बजे तक तथा रात्रि
सात (7) बजे से दस (10) बजे तक माना गया है।
बिलावल, गौड़सारंग तथा देशकार आदि सुबह गाया-
बजाया जाता है तथा कल्याण, मारु-बिहाग आदि
रात्रि में।

(3) ग, नि, कोमल वाले राग

इनके समय 10 से 4 बजे
सुबह तथा रात्रि में है। इस वर्ग में चार थाटों
के राग आते हैं, तोड़ी आसावरी भैरवी तथा
काफी, लेकिन कुछ नियम का अपवाद भी पाया
जाता है जैसे पटदीप राग।

निष्कर्ष में यह भी कह सकते हैं, रागों के
समय सिद्धांतों में संगीत विद्वानों के बीच मतभेद
भी पाया जाता है, उत्तर भारतीय संगीत के रागों
के प्रदर्शन के लिए समय का प्रतिबन्ध मनोवैज्ञानिक
क्रियाओं पर आधारित माना गया है। रागों को
समय-सिद्धान्त के बंधन में न बाँधकर
रंजकता जन चित्तरंजन का उद्देश्य
सामने रखते हुए विवेक के आधार पर
करना चाहिए।